srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

उन्नत खेती-खुशहाल किसान

बीजामृत

निर्माण सामग्रीः (100 किलोग्राम बीज के लिए)

- साफ पानी – 20 लीटर
- देशी गाय का ताजा मूत्र– 5 लीटर
- देशी गाय का ताजा गोबर – 5 किलोग्राम
- बिना बुझा चूना – 50 ग्राम
- पेड़ की जड़ अथवा मेंड़ के पास की मिट्टी– 250 ग्राम

बनाने की विधि

सर्वप्रथम एक प्लास्टिक की बाल्टी/ड्रम में पानी की निर्धारित मात्रा लेकर उसमें क्रमशः गौमूत्र, गोबर, चूना और मिट्टी को मिलाते हैं। प्रत्येक सामग्री को मिलानें के बाद लकड़ी के डंडे से घड़ी की दिशा में चलाना अवश्य चाहिए। मिश्रण को 24–48 घंटे के लिए छायादार स्थान में रख कर छोड़ देना चाहिए।

उपयोग विधि

बीज की निर्धारित मात्रा को छायादर जगह में फर्श पर फैलाकर बीजामृत का छिड़काव कर हल्के हाथ से मिलाना चाहिए इसके बाद बीज को छाया में सूखनें के लिए छोड़ देना चाहिए। बीज सूखनें पर बुवाई करनी चाहिए।

जीवामृत

निर्माण सामग्रीः (एक एकड़ हेतु)

- साफ पानी – 200 लीटर
- देशी गाय का ताजा मूत्र– 10 लीटर
- देशी गाय का ताजा गोबर – 10 किलोग्राम
- गुड़ या फलों के गूदों की चटनी – 2 किलोग्राम
- बेसन (किसी भी दलहन का आटा) – 2 किलोग्राम
- पेड़ की जड़ अथवा मेंड़ के पास की मिट्टी – 2 किलोग्राम

बनानें की विधि

सर्वप्रथम गुड़ की मात्रा के बराबर पानी लेकर उसमें गुड़ को मिलाकर गर्म करके चासनी बना लेते हैं। छायादर स्थान में 200 लीटर के ड्रम में पानी की निर्धारित मात्रा लेकर उसमें क्रमशः गौमूत्र, गोबर, गुड़ की चासनी, बेसन और मिट्टी को मिलाते हैं। प्रत्येक सामग्री को मिलानें के बाद लकड़ी के डंडे से घड़ी की दिशा में चलाना अवश्य चाहिए। मिश्रण को 3–5 दिन के लिए रख देना चाहिए, तथा प्रत्येक दिन सुबह–शाम अवश्य चलाना चाहिए।

उपयोग विधि

तैयार जीवामृत को 10 लीटर पानी में 1 लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। सिंचाई जल के साथ देनें के लिए 200 लीटर जीवामृत को प्रति एकड़ की दर से सिंचाई नाली/पाइप के पास जल में मिलाते हुए देना चाहिए।

घनजीवामृत

घन जीवामृत में सूक्ष्मजीव सुषुप्तावस्था में रहते हैं। खेत में डालने पर ये जीव सक्रिय होकर फसल को पोषकतत्व उपलब्ध करवाते हैं।

निर्माण सामग्रीः (एक एकड़ हेतु)

- गाय/अन्य जानवर का गोबर – 5 क्विंटल
- प्रति क्विंटल गोबर पर 20 लीटर जीवामृत

बनानें की विधि

सर्वप्रथम उपलब्ध गोबर को एक छायादर स्थान में एकत्रित करते है। उसमे उपस्थित अनुपयोगी पदार्थ जैसे प्लास्टिक, कॉच के टुकडे तथा पालीथिन को अलग कर देते हैं फिर गोबर पर पानी छिड़ककर इसे अच्छे से नम करके गोबर के ढेलों को तोडकर बारीक कर देते है। इसके बाद प्रति क्विंटल गोबर पर 20 लीटर जीवामृत की दर से छिड़ककर मिलाते हैं और पुरानें कपडों/टाट/बोरों से ढ़क देते हैं। प्रतिदिन सुबह और शाम पानी का छिड़काव करते है तथा प्रति 2 दिन पर खाद के ढेर को काटनें का कार्य करते है। इस प्रकार कुल 3 बार ढ़ेर को काटनें का कार्य किया जाता है। कुल 7 दिन में खाद बनकर तैयार हो जाता है।

उपयोग विधि

फसल के अनुसार 4–10 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से घनजीवामृत को खेत की अंतिम जुताई से पूर्व शाम के समय खेत में बिखेरकर तत्काल जुताई करना लाभप्रद होता है।

छाँछ

1. ताजी छाँछ का उपयोग

ताजी छाँछ को कपडे से छानकर 10 लीटर पानी में 500 मिलीलीटर छाँछ की दर से मिलाकर फसलों पर छिड़कने से पौधो की बढ़वार और विकास अच्छा होता है।

अन्य उपयोग

500 मिलीलीटर ताजी छाँछ में 150 मिलीलीटर नीमास्त्र मिलाकर और 10 लीटर पानी में घोल बनाकर स्प्रे पम्प की सहायता से छिड़कनें पर रस चूसने वाले कीटों जैसे हरे व सफेद मच्छर की रोकथाम की जा सकती है।

2. पुरानी छाँछ का उपयोग

बनाने की विधि

ताजे छाँछ को एक मटके में भरकर किसी छायादार स्थान अथवा किसी पेड़ के नीचे मटके को गाड़ देते है साथ ही अगर छाँछ में तांबे का सिक्का/कोई छोटा बर्तन डुबाकर रखा जाए तो यह और प्रभावी हो जाता है। यह छाँछ 20 से 25 दिनों में सड़ जाती है और कीटनाशक के तौरपर प्रयोग करनें के लिए उपयोग होती है।

उपयोग

पुरानी छाँछ को कपड़े से छानकर 10 लीटर पानी में 250 मिलीलीटर छाँछ की दर से मिलाकर घोल बनाकर स्प्रे पम्प की सहायता से फसलों में छिड़कने से इल्ली की समस्या पर नियंत्रण होता है जैसे चने की इल्ली, कपास की डेंडू और तुअर की फली छेदक इल्ली इत्यादि।

BIWAL

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

उन्नत खेती-खुशहाल किसान

नीमास्त्र

नीमास्त्र का उपयोग रस चूसने वाले कीट एवं छोटी सुंडी, इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- साफ पानी – 200 लीटर
- नीम की मुलायम टहनियों सहित हरी पत्तियॉ – 5 किलोग्राम
- नीम फल की खली – 5 किलोग्राम
- ताजा गौमूत्र – 5 लीटर
- गाय का ताजा गोबर – 1 किलोग्राम

बनाने की विधि

सर्वप्रथम नीम की मुलायम टहनियों सहित हरी पत्तियों एवं फलों को कूट कर चटनी बना लेते है उसके बाद एक प्लास्टिक के ड्रम में 200 लीटर साफ पानी लेकर उसमें क्रम से गौमूत्र, गोबर और पत्तियों तथा फलों की चटनी मिला देते है। सभी सामग्री को मिलानें के बाद लकडी के डंडे से घड़ी की दिशा में चलाकर जालीदार कपड़े से ड्रम को ढक देते हैं तथा इसे 2 दिन (48 घंटे) के लिए रख देते हैं और घोल को ड़ण्डे की सहायता से प्रति दिन दो बार चालाते हैं इस प्रकार 48 घंटे में नीमास्त्र बनकर तैयार हो जाता है।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

नीमास्त्र को मोटे कपडे से छानकर मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में भरकर छायादार स्थान में रखते हैं तथा धूप से बचाते हैं। नीमास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते है।।

उपयोग विधि

10 लीटर पानी में 500 मिलीलीटर की दर से नीमास्त्र को मिलाकर स्प्रे मशीन की सहायता से छिड़काव करना चाहिए।

अग्नि अस्त्र

अग्निअस्त्र का उपयोग तना कीट, फलों में होने वाली सूंड़ी एवं इल्लियों के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- देशी गाय का ताजा मूत्र – 20 लीटर (3 दिन से अधिक पुराना न हो)
- नीम के पत्तों की चटनी – 5 किलोग्राम
- धतूरे की हरी पत्तियों की चटनी – 500 ग्राम
- सीताफल/कनेर की हरी पत्तियों की चटनी – 2 किलोग्राम
- तीखी हरी मिर्च – 500 ग्राम
- देशी लहसुन की चटनी – 500 ग्राम

बनाने की विधि

सर्वप्रथम सभी प्रकार की पत्तियों, लहसुन और हरी मिर्च को कूटकर चटनी बना लेते हैं। इसके बाद एक मिट्टी के बर्तन में 20 लीटर गौमूत्र लेकर उसमें सभी तरह की चटनी मिला देते है। बर्तन को आग पर चढ़ाकर 2–3 उबाल आनें तक गर्म करते है। इसके बाद बर्तन को आग से उतारकर ठंड़ा होनें के लिए रख देते हैं। ठंड़ा होनें पर घोल को मोटे कपड़े से छानकर भण्डारित कर लेते हैं।

भण्डारण एवं अन्य सावधानियां

उबालने के लिए मिट्टी के बर्तन को ही लें। गौमूत्र को धातू के बर्तन में न ले न ही भंडारित करें। अग्निअस्त्र बनानें के बाद इसका भण्डारण केवल तीन माह तक कर सकते हैं।

उपयोग विधि

कीट प्रकोप दिखनें पर अग्निअस्त्र की 250 मिलीलीटर मात्रा प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से दो बार पौधों पर छिड़काव करते है।

ब्रम्हास्त्र

ब्रम्हास्त्र का उपयोग अन्य कीट और बड़ी सूंडी, इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- ताजा गौमूत्र – 10 लीटर (3 दिन से अधिक पुराना न हो)
- नीम की हरी पत्तियॉ – 5 किलोग्राम
- सीताफल, कनेर, करंज, लेनटाना, गाजरघास की हरी पत्तियॉ 1–1 किलोग्राम
- धतूरा की हरी पत्तियॉ – 1 किलोग्राम
- लहसुन – 500 ग्राम
- तीखी हरी मिर्च – 1 किलोग्राम

बनानें की विधि

सर्वप्रथम सभी प्रकार की पत्तियों, लहसुन और हरी मिर्च को कूटकर चटनी बना लेते हैं। इसके बाद एक मिट्टी के बर्तन में 10 लीटर गौमूत्र लेकर उसमें सभी तरह की चटनी मिला देते है। बर्तन को आग पर चढ़ाकर 2–3 उबाल आनें तक गर्म करते है। इसके बाद बर्तन को आग से उतारकर ठंड़ा होनें के लिए रख देते हैं। ठंड़ा होनें पर घोल को मोटे कपड़े से छानकर भण्डारित कर लेते हैं और 3 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

भण्डारण एवं अन्य सवाधानियां

ब्रह्मस्त्र का भंडारण मिट्टी/प्लास्टिक के बर्तन में करें। ब्रह्मस्त्र को छाया में रखें एवं धूप से बचाएं।

उपयोग विधि

कीट प्रकोप दिखनें पर ब्रम्हास्त्र की 250 मिलीलीटर मात्रा प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से दो बार पौधों पर छिड़काव करते है।

दसपर्णी अर्क

दसपर्णी अर्क का प्रयोग सभी तरह के रस चूसक कीट और सभी तरह की इल्लियों के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्रीः साफ पानी–200 लीटर, ताजा गौमूत्र –20 लीटर (तीन दिन से अधिक पुराना न हो), ताजा गोबर–2 किलोग्राम, नीम की मुलायम टहनीयुक्त हरी पत्तियॉ–10 किलोग्राम, धतूरा की हरी पत्तियॉ–2 किलोग्राम, कनेर, चॉदनी, गुडहल, पपीता, अरंडी, तुलसी, गेंदा, गुलदाउदी की हरी पत्तियॉ 2–2 किलोग्राम (कोई 5), करंज, बेल, आम, अनार, अमरूद, सीताफल की हरी पत्तियॉ 2–2 किलोग्राम (कोई 5), लहसुन–500 ग्राम, तीखी हरी मिर्च–500 ग्राम, अदरक–250 ग्राम

बनानें की विधि

सर्वप्रथम सभी प्रकार की पत्तियों, लहसुन, हरी मिर्च और अदरक को कूटकर चटनी बना लेते हैं। इसके बाद एक ड्रम में 200 लीटर पानी लेकर उसमें क्रम से गौमूत्र, गोबर और चटनी को मिला देते है। प्रत्येक सामग्री मिलानें के बाद लकड़ी के डण्डे से घड़ी की दिशा में अवश्य चलाना चाहिए। ड्रम को कपड़े से ढककर 40 दिन के लिए रख देते हैं साथ ही प्रतिदिन दो बार डण्डे से चलाते है। 40 दिन बाद घोल को मोटे कपड़े से छानकर मिट्टी/प्लास्टिक के बर्तन में भण्डारित कर लेते हैं और 6 माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

उपयोग विधि

कीट प्रकोप दिखनें पर दसपर्णी अर्क की 250 मिलीलीटर मात्रा प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 7 दिन के अंतर से दो बार पौधों पर छिड़काव करते है।

BIWAL